साहसी चींटी

डॉ॰ शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी (अलीग)

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहमवाला है।'

दो शब्द

बच्चों के अदब (बाल-साहित्य) की दुनिया में डॉ॰ शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी का नाम एक कीट-वैज्ञानिक के तौर पर मशहूर है। कीड़ों-पतंगों की ज़िन्दगी और उनके हालात बच्चों को कहानी के रूप में सुनाने और उन्हें लिखित रूप में पेश करने में उन्हें बहुत महारत हासिल है। इससे पहले उनकी एक दर्जन से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं और बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं। लेखक को बच्चों के अदब और वैज्ञानिक कामों के लिए कई अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

बच्चों के लिए ऐसा अदब (साहित्य) जिसका कोई अच्छा मक़सद हो और जो उन्हें अच्छा भी लगे, समय की एक बड़ी आवश्यकता है। डॉ॰ शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी की किताबें इस ज़रूरत को बड़ी हद तक पूरा करती हैं। ख़ुद एम॰एम॰आई॰ पब्लिशर्स से उनकी पाँच किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं।

'साहसी चींटी' में लेखक ने चींटी के पैदा होने से मरने तक की कहानी बहुत ही मनोरंजक अन्दाज़ से पेश की है। बच्चों के द्वारा बोल-चाल के अन्दाज़ की यह कहानी चींटी के जीवन को बहुत अच्छी तरह से पेश करती है। बच्चों के द्वारा किए गए सवालों की मदद से लेखक ने चींटी के जीवन की अनेक प्रक्रियाओं को बहुत सरल तरीक़े से पेश किया है।

चींटी की कहानी बहुत रोचक ढंग से शुरू होती है। एक बच्चे को चींटी काट लेती है, जो एक दूसरी चींटी का रास्ता रोकने की कोशिश कर रहा था। किस तरह चींटी अपनी ख़ास सुगंध से अपने बचाव के लिए सिपाही चींटी को ख़बर करती है और सिपाही चींटी के बच्चे को काटने के नतीजे में किस तरह दूसरी चींटी अपने-आपको बचाकर भागने में सफल हो जाती है। चींटियों को अल्लाह तआला ने किस तरह अपनी ख़ास बू (गंध) छोड़कर सूचना देने की योग्यता

प्रदान की है, इसे इस किताब में बहुत विस्तार से बताया गया है।

किसी जगह खाने की कोई चीज़ हो तो वे एक ख़ास क़िस्म की बू (गंध) छोड़कर चींटियाँ एक-दूसरे को ख़बर कर देती हैं और थोड़ी ही देर में वहाँ चींटियों की लाइन लग जाती है। यह ख़ास बू यानी फ़ेरोमोंस (Feromones) और कायरोमोंस (Kairomones) ख़ास क़िस्म की बू पैदा करनेवाले ग्लैंड्स हैं जो अल्लाह ने चींटी के शरीर में पैदा किए हैं।

इस किताब में चींटियों की बस्तियों का नक़्शा बहुत विस्तार से खींचा गया है। उनके काम के बँटवारे के बारे में भी बताया गया है। महारानी, मज़दूर चींटी और सिपाही चींटी का उल्लेख है। यह भी बताया गया है कि किस तरह वॉलंटियर चींटियाँ जो अपने-आपको रस जमा करने के लिए पेश कर देती हैं, जबकि रस ख़त्म होने के बाद उनकी जान चली जाती है। यह चर्चा भी है कि घर में अंडों, लारवों, प्यूपों और फफूँद के खेतों के लिए अलग-अलग जगहें होती हैं।

इस किताब में क़ुरआन मजीद की सूरा-27 नम्ल में चींटी और हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) के बीच होनेवाली बातचीत का भी वर्णन है।

लेखक ने बहुत मनोरंजक अन्दाज़ में चींटी के साझा-जीवन, मिलकर काम करने और काम के बँटवारे को बहुत अच्छी तरह दर्शाया है। यह किताब बच्चों के साथ-साथ बड़ों के लिए भी क़ीमती मालूमात का साधन है। लेखक अपनी इस सफल कोशिश के लिए मुबारकबाद के हक़दार हैं। ख़ुदा करे यह किताब पढ़नेवालों के लिए क़ुदरत के करिश्मों को समझने और उनपर ग़ौर करने का रास्ता खोले और लेखक के लिए अज्र (नेक बदले) का साधन बने।

(आमीन!)

–मुहम्मद अशफ़ाक़ अहमद
पूर्व सचिव शिक्षा विभाग
जमाअते-इस्लामी हिन्द
नई दिल्ली-110025

साहसी चींटी

अली अमीन, अली अब्दुल्लाह और आबिद तीनों भाई थे। इन तीनों की उम्र में केवल डेढ़ से दो साल का अन्तर था। अली अमीन सबसे बड़े, अली अब्दुल्लाह उनसे छोटे और आबिद सबसे छोटे थे। अली अमीन और आबिद बड़े ही नटखट थे। उन्हें हर वक़्त कोई-न-कोई नई शरारत सूझती रहती थी। हाँ, अली अब्दुल्लाह इन दोनों से ज़रा अलग थे। आमतौर पर वे शरारतों में कम ही हिस्सा लेते थे और जब कभी दोनों भाइयों की शरारतें हद से आगे बढ़ने लगतीं तो वे उन्हें रोकते और बुज़ुर्गों की तरह नसीहतें भी किया करते।

अली साद इन तीनों के चचा-ज़ाद भाई थे। घर पास-पास होने की वजह से अकसर ये सब एक साथ ही रहते, मिलकर खेलते और नई-नई शरारतें किया करते। शरारतें करने में अली साद भी कुछ कम नहीं थे, बल्कि अकसर मौक़ों पर स्कीम उन्हीं की हुआ करती थी। चींटे-चींटियों को परेशान करना इन लोगों का एक मनपसन्द काम था। जहाँ कहीं उन्हें चींटियों की लाइन नज़र आ जाती वे वहाँ पहुँचकर कुछ चींटियों को उनके रास्ते से दूर हटा देते। उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य होता कि ये चींटियाँ कुछ देर तो इधर-उधर भटकतीं, मगर आख़िरकार अपनी लाइन खोज लेने में सफल हो जातीं। ये लोग सोचते कि आख़िर ये नन्हीं-नन्हीं-सी चींटियाँ ऐसा किस तरह कर पाती हैं। उन्हें इसकी वजह जानने की बड़ी इच्छा थी।

बरसात का मौसम आया तो कीड़े-मकोड़ों की भरमार हो गई। क्या घर और क्या बाहर, हर तरफ़ कोई-न-कोई कीड़ा रेंगता फुदकता नज़र आ ही जाता। अली अमीन की अम्मी ने सब बच्चों को समझाया था कि देखो नंगे पैर मत फिरा करो, हो सकता है कोई कीड़ा तुम्हें काट ले। अकसर कीड़े ज़हरीले होते हैं, वे यदि शरीर से छू जाएँ तो खुजली पैदा कर देते हैं और कुछ से तो जिल्द पर छाले तक पड़ जाते हैं। सब बच्चों में केवल अली अब्दुल्लाह ही थे जो अपने बड़ों का

कहना मानते थे और हमेशा जूते पहने रहते, वरना बाक़ी बच्चे तो हर समय नंगे पैर ही नज़र आते थे।

एक दिन, जब बादल घिरे हुए थे और ठंडी-ठंडी मनमोहक हवाएँ चल रही थीं, सभी बच्चे घर के बाहर बड़े मैदान में दौड़ लगा रहे थे। दौड़ने में अली अमीन और अली साद दोनों ही बहुत तेज़ थे। कभी एक आगे निकलता तो कभी दूसरा। वे बहुत देर से इसी तरह दौड़ लगा रहे थे कि अचानक दौड़ते-दौड़ते अली साद ने पूछा—

"अरे अमीन! आख़िर यह आबिद किधर ग़ायब हो गए?"

उन्होंने चारों तरफ़ नज़रें दौड़ाईं। देखा तो आबिद उनसे दूर मैदान के दूसरे कोने में एक जगह खड़े थे। लगता था वे ज़मीन पर कुछ देख रहे थे। इन लोगों ने उन्हें आवाज़ें दीं, "आबिद! आबिद! तुम वहाँ खड़े क्या कर रहे हो? इधर आओ और हमारे साथ खेलो।" आबिद ने इन लोगों की आवाज़ें तो सुनीं, मगर उनपर कोई ध्यान नहीं दिया और वहीं खड़े-खड़े जो कुछ कर रहे थे, करते रहे।

अली अमीन, अली साद और अली अब्दुल्लाह ने सोचा कि उधर ही चलकर देखना चाहिए कि आख़िर माजरा क्या है और यह साहब इतनी देर से वहाँ कर क्या रहे हैं। इन लोगों ने अपनी दौड़ रोक दी और उधर चल दिए जिधर आबिद खड़े थे। पास पहुँचे तो देखा कि आबिद अपने एक पैर को कभी आगे रखते हैं तो कभी पीछे ले आते हैं। वे उसे कभी दाईं तरफ़ करते हैं तो कभी बाईं तरफ़ और साथ-ही-साथ वे मुँह-ही-मुँह में कुछ बड़बड़ाते भी जा रहे थे। जब ये लोग बिलकुल पास पहुँचे तो सुनाई दिया। आबिद किसी से कह रहे थे—

"आज तो मैं तुमसे पूछकर ही रहूँगा। अगर तुमने मुझे नहीं बताया कि तुम सब एक लाइन बनाकर क्यों चलती हो तो मैं तुम्हें तुम्हारे घर में नहीं घुसने दूँगा।"

सबने देखा कि आबिद अपने एक पैर से एक चींटी का रास्ता रोक रहे थे इसी लिए वे अपने उस पैर को कभी आगे करते, कभी पीछे। कभी दाएँ तो कभी

बाएँ। पास ही ज़मीन में एक सुराख़ (बिल) भी था जो शायद उस चींटी का घर था, जहाँ वह जाना चाह रही थी, लेकिन आबिद अपने पैर से उसे सुराख़ तक पहुँचने से रोक रहे थे और साथ ही अपना सवाल भी दुहराते जा रहे थे। यह देखकर अली अब्दुल्लाह ने कहा–

"अरे आबिद! यह क्या बेवक़ूफ़ी है? कहीं चींटियाँ भी बोला करती हैं कि तुम उनसे पूछने की ज़िद कर रहे हो? भला वह तुम्हें कैसे बताएगी कि चींटियाँ एक लाइन में क्यों चलती हैं! नादानी मत करो। उसका रास्ता छोड़ दो और हमारे साथ आकर खेलो।"

आबिद ने अपने भाइयों की तरफ़ देखा और उन्हें याद दिलाते हुए बोले–

"क्या आप लोगों को पिछले सप्ताह का दर्से-क़ुरआन याद नहीं रहा जब मौलाना साहब हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) का क़िस्सा सुना रहे थे कि जब वे और उनका लश्कर चींटियों की वादी में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा कि ऐ चींटियो! जल्दी से अपने बिलों में घुस जाओ, कहीं ऐसा न हो कि सुलैमान (अलैहि॰) और उनका लश्कर तुम्हें कुचल दे। यह सुनकर हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) मुस्कराए और उन्होंने इसपर अल्लाह का शुक्र अदा किया। (क़ुरआन, सूरा-27 नम्ल, आयतें-18,19) फिर आप बताइए कि जब एक चींटी की बात हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) समझ सकते थे तो फिर हम क्यों नहीं समझ सकते।"

यह सुनकर अली अमीन ने कहा–

"अरे बेवक़ूफ़! हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) तो अल्लाह के रसूल थे। तुम भला अपना मुक़ाबला उनसे कैसे कर सकते हो?"

ये लोग अभी आपस में ये बातें कर ही रहे थे कि चींटी के बिल में से अचानक एक मोटा-ताज़ा चींटा बहुत तेज़ी से बाहर निकला। उसने अपने दोनों नुकीले धारदार दाँत फैला रखे थे। वह बहुत फुर्ती से आबिद के पैर की तरफ़ लपका और अपने सख़्त दाँतों को उनके अँगूठे में गाड़ दिया। हमला इतना अचानक और ज़ोरदार था कि आबिद की चीख़ निकल गई। उनके अँगूठे से ख़ून की बूँद

छलक आई और दर्द से उनकी आँखों में आँसू आ गए।

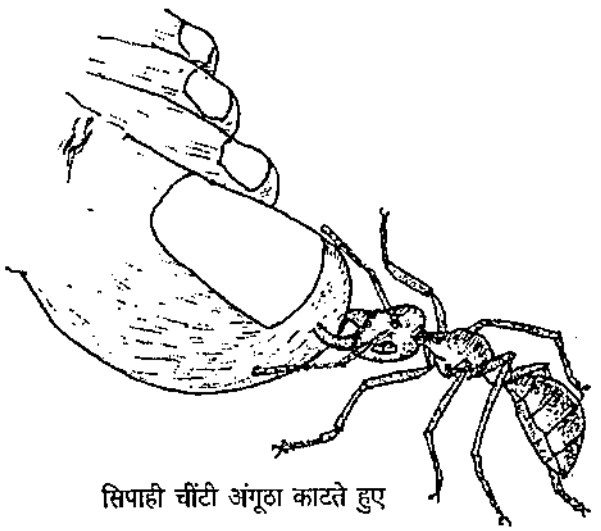
सिपाही चींटी अंगूठा काटते हुए

सभी बच्चों ने घबराकर आबिद के पैर की तरफ़ देखा, मगर किसी में इतनी हिम्मत न थी कि वह इस ख़तरनाक चींटे को उनके अँगूठे से अलग कर सके। वे बड़ी बेबसी से उनके अँगूठे की तरफ़ देखते रहे। इसी बीच वह चींटी जिसका रास्ता आबिद ने रोक रखा था, मौक़ा पाकर तेज़ी से अपने सुराख़ में घुस गई। इसके फ़ौरन बाद ही उस चींटे ने भी आबिद का अँगूठा छोड़ दिया और वह भी चींटी के पीछे ही सुराख़ में ग़ायब हो गया।

यह सब इतने नाटकीय अन्दाज़ में हुआ कि किसी को न कुछ करने का मौक़ा मिला और न ही सोचने का, मगर कुछ देर बाद जब आबिद की तकलीफ़ कुछ कम हुई तो सब लोग इतनी तेज़ी से होनेवाली कारगुज़ारी के बारे में सोचकर हैरान हो उठे। यह ठीक है कि उस चींटी ने आबिद से कोई बात नहीं की थी, मगर यह भी बहुत साफ़ था कि उसी चींटी ने अपने साथी चींटे को या तो आवाज़ दी थी या फिर किसी और तरीक़े से पैग़ाम भेजकर बुलाया था, क्योंकि वह मोटा-सा चींटा न सिर्फ़ अपने ख़तरनाक दाँतों को खोले हुए निकला था, बल्कि वह सीधा आबिद के पैर पर हमलावर भी हुआ था और फिर जैसे ही उसकी साथी चींटी आज़ाद होकर अपने घर में दाख़िल हुई उसने भी आबिद का अँगूठा छोड़ दिया और ख़ुद भी उसी सुराख़ में जाकर ग़ायब हो गया। यक़ीनन यह सब अचानक नहीं था, बल्कि एक सोचा-समझा काम था। बच्चे हैरानी से इसके बारे में सोचते हुए अपने घर की तरफ़ चल दिए।

"हमें इस सबके बारे में दादा-अब्बू को बताना चाहिए, मुमकिन है वे इसके बारे में हमें कुछ बता सकें।" अली अमीन ने मश्वरा पेश किया।

सबने अमीन की बात मान ली और दादा-अब्बू के घर आने का इन्तिज़ार करने लगे। शाम को जब दादा-अब्बू घर लौटे तो सब बच्चे उनके पास जमा हो गए और आज जो कुछ हुआ था उसकी पूरी रिपोर्ट उन्हें सुनाई। उसे सुनकर दादा-अब्बू ने कहा—

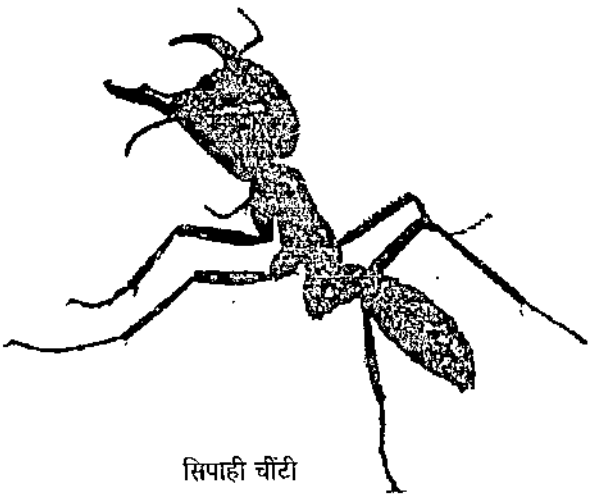
सिपाही चींटी

"देखो बच्चो! एक बात तो अच्छी तरह समझ लो कि क़ुरआन का जो वाक़िआ मौलाना ने बयान किया था वह बिलकुल सही है। चींटियाँ एक-दूसरे से बहुत अच्छी तरह बातें कर सकती हैं। हाँ, यह ज़रूरी नहीं कि वे इस तरह बात करती हों जैसे तुम लोग आपस में बातें करते हो। जहाँ तक आबिद के अँगूठे पर हमला करनेवाले चींटे का सवाल है, वह चींटियों की बस्ती का एक सिपाही था और इसमें कोई शक नहीं कि उसे इसी चींटी ने बुलाया था।"

"भला बातें करने का कोई दूसरा तरीक़ा क्या हो सकता है! हम तो समझते हैं कि बातें इसी तरह हो सकती हैं जैसे हम एक-दूसरे से बात करते हैं।" अली साद ने कहा।

"अगर एक चींटी अपने किसी साथी को कुछ बताना चाहती है तो यह बिलकुल ज़रूरी नहीं है कि वह तुम्हारी तरह चिल्लाकर बताए, बल्कि वह कोई इशारा भी कर सकती है जिसे तुम्हारे लिए समझना मुमकिन न हो।" दादा-अब्बू ने कहा।

"इतनी छोटी-सी चींटी भला कैसे कोई इशारा करेगी और फिर सुराख़ के

अन्दर बैठा वह चींटा उस इशारे को कैसे देखे या समझेगा!" अली अब्दुल्लाह ने किसी क़द्र हैरत से कहा।

"देखो बच्चो! इशारे करने के भी कई तरीक़े होते हैं। कुछ इशारे हाथों, पैरों या आँखों से किए जाते हैं जिन्हें दूसरे देख और समझ लेते हैं, मगर कुछ इशारे ख़ास तरह की गंध (बू) छोड़कर भी किए जाते हैं। गंध सूँघकर दूसरे यह समझ लेते हैं कि उनका साथी उनसे क्या चाहता है। चींटियाँ भी इसी क़िस्म के इशारों से काम लेती हैं।" दादा-अब्बू ने समझाया।

बच्चों के लिए यह ख़बर बहुत हैरान कर देनेवाली थी। उनके लिए यह सोच पाना बहुत मुश्किल था कि ये छोटी-छोटी-सी चींटियाँ अपनी हर बात अपने साथियों तक पहुँचाने के लिए अलग-अलग तरह की गंध छोड़ती हैं। वे सोचने लगे कि बातें तो हज़ार तरह की होती हैं फिर भला यह कैसे मुमकिन है कि ये चींटियाँ हर बात के लिए एक अलग बू (गंध) का इस्तेमाल कर लेती हों। यही सोचते हुए अली अमीन ने पूछा—

"दादा-अब्बू! यह बात तो बड़ी अजीब-सी लगती है कि चींटी जैसी नन्हीं-सी जान अपनी हर बात के लिए एक अलग तरह की बू पैदा कर लेने की क़ुदरत रखे। इतनी प्रकार की बू पैदा कर लेना क्या कोई आसान काम होगा?"

"इसी को अल्लाह की क़ुदरत कहा जाता है। इसके बारे में जितना सोचोगे अल्लाह की अज़मत (महानता) और बड़ाई उतनी ही तुम्हारे दिलों में पैदा होगी। यह उसी की कारीगरी है कि उसने न सिर्फ़ चींटी जैसी नन्हीं जान को पैदा किया, बल्कि उसे यह अजीबो-ग़रीब सलाहियत भी दी कि वह अपने जिस्म से न सिर्फ़ तरह-तरह की बू पैदा कर ले, बल्कि हर एक को सही अवसर पर इस्तेमाल भी कर सके। अल्लाह ने उन चींटियों के शरीर में कुछ ख़ास तरह की ग्रंथियाँ बनाई हैं जिनसे कुछ रसायन का रिसाव होता है जिसे तकनीकी ज़बान में फ़ेरोमोंस और कायरोमोंस कहते हैं। मिसाल के तौर पर अगर किसी जगह खाने की कोई चीज़ मौजूद है जिसे किसी चींटी ने खोजा है तो वह उसकी ख़बर अपने साथियों को

देने के लिए एक ख़ास बू का इस्तेमाल करती है। उसके साथी उसे महसूस करते ही खाने की चीज़ के चारों तरफ़ जमा हो जाते हैं। किसी दुश्मन की मौजूदगी की ख़बर भी सिपाही चींटियों को इसी तरह मिलती है।

चींटियाँ अपने रास्तों की निशानदेही भी ऐसी ही बू के ज़रिए से करती हैं। आगे चलनेवाली चींटी फ़िज़ा में ख़ास कायरोमोंस छोड़ती हुई चलती है। उसकी बू एक पट्टी की शक्ल में फैल जाती है और पीछे आनेवाली चींटियाँ इस बू को सूँघकर इसी पट्टी पर आगे बढ़ती रहती हैं। केवल इतना ही नहीं, बल्कि ये चींटियाँ भी वही कायरोमोंस छोड़ती हुई आगे जाती हैं, जिसके नतीजे में उस बू का बाक़ायदा एक रास्ता बन जाता है जिसे खोजना चींटियों के लिए आसान होता हैं। इसी लिए तुम देखते हो कि चींटियाँ न केवल एक लाइन में चलती हैं, बल्कि उनमें से अगर कोई अपने रास्ते से हटा दी जाए तो वह थोड़ी देर इधर-उधर भटककर फिर उसी लाइन को खोज लेती है।" दादा-अब्बू ने बहुत विस्तार से बताया।

"यह तो सचमुच चींटियों की एक बेमिसाल ख़ूबी है जो अल्लाह ने उन्हें अता की है।" अली साद बोले।

"बेशक, और फिर अल्लाह तआला ने इस ख़ूबी का इल्म अपने रसूल हज़रत सुलैमान (अलैहि॰) को भी अता फ़रमा दिया था, जिसके ज़रिए से उन्होंने न केवल चींटी की बात समझ ली, बल्कि उस इल्म के लिए अल्लाह का शुक्र भी अदा किया। चींटियों की इस बेमिसाल ख़ूबी के बारे में एक वाक़िआ तो बहुत ही मशहूर है।" दादा-अब्बू ने कहा।

"कौन-सा वाक़िआ?" शौक़ से सब बच्चे एक साथ बोल पड़े।

दादा-अब्बू ने वाक़िआ सुनाना शुरू किया, "कीकर की एक क़िस्म है जिसे 'बुल-हार्न' कहते हैं। इस नाम की वजह यह है कि इस कीकर के काँटे बहुत बड़े और बैल की सींगों के समान होते हैं। चींटियाँ इन सींग जैसे काँटों के अन्दर अपने घर बनाकर रहती हैं। आस्ट्रेलिया, अफ़्रीक़ा और अमरीका के कुछ हिस्सों

में बुल-हार्न के जंगल पाए जाते हैं। ऐसे ही एक बड़े से जंगल में चींटियों की अनगिनत बस्तियाँ कीकर के काँटों के अन्दर आबाद थीं। एक दिन कोई लकड़हारा उधर आ निकला और उसने बुल-हार्न काटना शुरू कर दिया। जैसे ही उसने अपना काम शुरू किया एक चींटी ने अपने कायरोमोंस से एक बहुत ही असह्य बू छोड़ना शुरू कर दी। उसे महसूस करके उस बस्ती की दूसरी चींटियों ने भी वही काम शुरू कर दिया। उस बस्ती की देखा-देखी पूरे जंगल की सभी बस्तियों की चींटियों ने भी अपने कायरोमोंस का इस्तेमाल किया और वैसी ही बू निकालने लगीं। जंगल की सारी चींटियों की बू इतनी तेज़ थी कि लकड़हारा उसे बरदाश्त न कर सका और सिर पर पैर रखकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार क़ुदरत की अता की हुई इस ख़ूबी ने वहाँ रहनेवाली चींटियों की जान बचा ली।"

बुल-हार्न

"सच दादा-अब्बू, अल्लाह तआला ने इन छोटी-छोटी चींटियों को भी कैसी-कैसी सलाहियतें दी हैं जिनकी मदद से वे अपने दुश्मनों से अपनी हिफ़ाज़त तक कर लेती हैं। हम तो उन्हें हमेशा ही से अजीबो-ग़रीब समझते थे, मगर आपकी बातों ने तो इन्हें और भी अजीब बना दिया।" अली अमीन ने कहा।

"अल्लाह की यह मख़लूक़ तो सचमुच बहुत अनोखी और निराली है। क्या

तुम लोग एक चींटी की कहानी सुनना पसन्द करोगे, जिसे सुनकर तुम्हें चींटियों की ज़िन्दगी की और भी बहुत-सी अजीबो-ग़रीब बातों का पता चलेगा?'' दादा-अब्बू ने कहते-कहते पूछा।

कहानी सुनने से ज़्यादा दिलचस्प भला और क्या बात हो सकती थी? बच्चे यह सुनकर ख़ुश हो गए और कहानी सुनने के शौक़ में दादा-अब्बू के कुछ और पास आकर बैठ गए। दादा-अब्बू ने कहानी सुनने का उनका शौक़ देखा तो बोले—

''एक घने जंगल के किनारे मिट्टी का एक बड़ा-सा तोदा था, जिसके अन्दर चींटियों की एक बस्ती आबाद थी। मरमीका नाम की एक चींटी अपने साथियों के साथ इसी बस्ती में रहती थी। वह एक परवाली चींटी थी। इस बस्ती में केवल वही एक परवाली चींटी नहीं थी, बल्कि उस जैसी बहुत-सी परवाली चींटियाँ वहाँ रहती थीं। इस बस्ती की सब चींटियाँ चाहे परोंवाली हों या बिना परवाली, मिरमीका ही के नाम से जानी जाती थीं।'' दादा-अब्बू ने बताया तो आबिद ने बड़े आश्चर्य से पूछा—

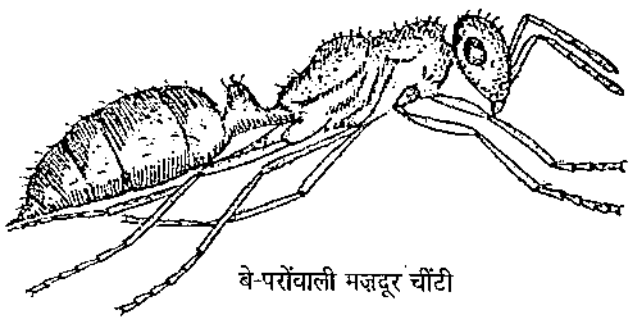

बे-परोंवाली मज़दूर चींटी

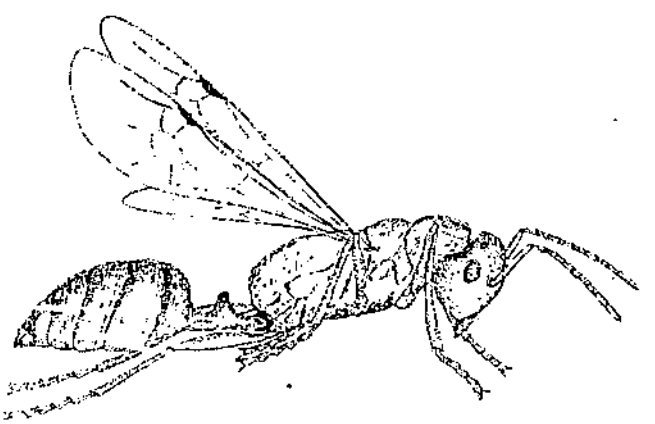

परोंवाली मज़दूर चींटी

"दादा-अब्बू! क्या चींटियों के भी पर होते हैं?"

दादा-अब्बू बोले—

"हाँ बेटे, क्यों नहीं! चींटियों की ज़िन्दगी में एक समय ऐसा भी आता है जब उनमें परवाली चींटियाँ पैदा होने लगती हैं। उनके दो जोड़ी बड़े-बड़े सफ़ेद पर होते हैं। अगली जोड़ी के पर पिछलों के मुक़ाबले कुछ बड़े होते हैं।"

अली अब्दुल्लाह जो बहुत ग़ौर से चींटी की कहानी सुन रहे थे बोल पड़े—

"चींटियाँ तो कुछ अजीब सी मख़लूक़ (प्राणी) है ही मगर लगता है कि उनके नाम तो उनसे भी ज़्यादा अजीब होते हैं। क्या आपको मिरमीका कुछ अजीब सा नाम नहीं लगता?"

"चींटियों ही के नहीं, बल्कि सभी जीवों के वैज्ञानिक नाम कुछ ऐसे ही अजीब होते हैं। यह नाम लैटिन या ग्रीक भाषाओं के शब्दों से बनाए जाते हैं। जिस ज़माने में जीवों को नाम देने का रिवाज शुरू हुआ और वैज्ञानिकों ने नाम देने के लिए कुछ अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून बनाए तब यही भाषाएँ विज्ञान की भाषा हुआ करती थीं। आज भी जानवरों और पेड़-पौधों के नाम इन्हीं भाषाओं के शब्दों से बनाए जाते हैं। मरमीका भी चींटियों की एक जाति का वैज्ञानिक नाम है। दूसरी कई जातियाँ फ़ोरमीका, मीरमेसिया, डोराइलस और कैमपोनोटस जैसे नामों से जानी जाती हैं।" दादा-अब्बू ने समझाया और कहानी को आगे बढ़ाते हुए बोले—

"हाँ, तो मैं कह रहा था कि मिरमीका के परवाले साथियों में नर और मादा दोनों तरह की चींटियाँ शामिल थीं। बस्ती में कुछ बड़े क़दवाली चींटियाँ भी थीं, जिनके दाँत बहुत बड़े-बड़े, लम्बे और नुकीले थे। ये सिपाही चींटियाँ कहलाती थीं। बस्ती में इनका वही काम था जो उन जैसी एक चींटी ने आबिद के साथ किया था। इन सिपाहियों को जैसे ही किसी दुश्मन की ख़बर मिलती है, वे फ़ौरन उनसे लड़ने वहाँ पहुँच जाती हैं। इस बस्ती के एक बहुत ही अच्छे और महफ़ूज़ कमरे में एक रानी माँ (महारानी) भी थी। सब चींटियाँ उसका बहुत आदर करतीं और उसका ख़याल रखती थीं। बस्ती की सब चींटियाँ उसका हर हुक्म बिना देर

किए मानती थी। रानी माँ केवल अंडे देने का काम करती थी, ताकि नई-नई चींटियाँ पैदा होती रहें और बस्ती की आबादी बढ़ती रहे। मिरमीका अपने सभी साथियों के साथ बहुत आराम और चैन से रह रही थी कि अचानक एक दिन उसे रानी माँ की ओर से एक पैग़ाम मिला।"

"कैसा पैग़ाम? क्या कोई पैग़ाम लानेवाली चींटी भी होती है बस्ती में?" अली साद ने जानना चाहा।

"पैग़ाम किसी चींटी के ज़रिए से नहीं आता। पैग़ाम का मतलब यह था कि मिरमीका ने एक ख़ास तरह की गंध महसूस की जो रानी माँ के पास से आ रही थी। इस गंध के द्वारा रानी माँ उससे और उस जैसी सभी परवाली चींटियों से कह रही थीं—

'सब परवाली चींटियाँ चाहे वे नर हों या मादा, वे सब-की-सब इस बस्ती को छोड़कर बाहर चली जाएँ।'

मिरमीका यह पैग़ाम सुनकर घबरा गई। वह भागी-भागी रानी माँ के पास गई और बोली—

'रानी माँ! हमसे आख़िर कौन-सी ग़लती हो गई? हमने तो हमेशा ही आपका हर हुक्म माना है। आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि आपने हमसे किसी काम के लिए कहा हो और हमने उससे इनकार किया हो। फिर आप यह सज़ा हमें क्यों दे रही हैं? हम भला बरसात के इस ख़राब मौसम में इस बस्ती को छोड़कर कहाँ जाएँगे और क्या करेंगे?'

यह सुनकर रानी माँ ने कहा—

'यह सज़ा नहीं है। मैं भला तुम्हें सज़ा क्यों देने लगी! तुम सब तो मेरे बहुत ज़्यादा फ़रमाँबरदार बच्चों में से हो जिन्होंने हमेशा मेरा हुक्म माना है और कभी भी हुक्म मानने से इनकार नहीं किया। यह तो अस्ल में वक़्त की एक बड़ी ज़रूरत है कि मैं तुमसे इस बस्ती को छोड़ने के लिए कह रही हूँ। तुम ख़ुद देख सकती हो, इस बस्ती की आबादी कितनी ज़्यादा बढ़ चुकी है और यहाँ जगह की

कितनी कमी है। अब समय आ गया है कि इस बस्ती की परवाली चींटियाँ इस बस्ती को छोड़कर बाहर निकल जाएँ। अल्लाह की यह ज़मीन बहुत बड़ी और कुशादा है। तुम सबको चाहिए कि ज़मीन में दूर-दूर तक फैल जाओ और वहाँ नए घरों की बुनियाद रखो।'

'फिर भी रानी माँ, हमें यह तो बताइए कि हम यहाँ से निकलने के बाद किधर जाएँ और घर कैसे बनाएँ?' मिरमीका ने कहा।

'यह तो तुम्हें वही बताएगा जिसने तुम्हें पैदा किया है। हाँ, मैं तुम्हें केवल एक उपदेश दे सकती हूँ कि तुम कहीं भी जाओ मगर कभी भी न तो हालात से मायूस होना और न ही हिम्मत हारना। पूरे हौसले से हर मुश्किल का मुक़ाबला करना और हमेशा अपनी अक़्ल का इस्तेमाल करके उसे हल करने की कोशिश करना। अल्लाह ने तुम्हें चार ख़ूबसूरत पर दिए हैं। इनकी मदद से तुम जिधर चाहो उड़कर जा सकती हो। जितनी दूर तुम जा सकोगी मुझे उतनी ही ख़ुशी होगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी औलाद ज़मीन में दूर-दूर तक फैल जाए। एक बात और भी सुन लो, तुम्हारी बहनों ने तुम्हारे मुँह के नीचे एक थैली में ख़ूब चबाकर पतला किया हुआ खाना भर दिया है और साथ ही फफूँद के कुछ रेशे भी रख दिए हैं। इसके अलावा तुम्हारे शरीर में काफ़ी मात्रा में चर्बी भी महफ़ूज़ है। ये सब चीज़ें बुरे समय में तुम्हारे काम आएँगी। उम्मीद है उस समय तक तुम यक़ीनन इस क़ाबिल भी हो जाओगी कि अपनी व्यवस्था ख़ुद कर सको। अच्छा अब तुम विदा हो जाओ। अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे!'

यह सुनते ही मिरमीका और सब परवाले चींटे-चींटियों ने अपनी रानी माँ को प्यार से अलविदा कहा और बस्ती के सुराख़ से बाहर निकलना शुरू कर दिया। बाहर की दुनिया बहुत बड़ी और शानदार थी। उन्होंने ख़ुश होकर हवा में उड़ना शुरू कर दिया। खुले हुए आसमान में उड़ना उन्हें बहुत भला लग रहा था। बस्ती के अन्दर उन्हें परवाली चींटियों की संख्या का अन्दाज़ा नहीं होता था, मगर बाहर आकर मालूम हुआ कि उनकी संख्या तो बहुत ज़्यादा थी। उन्होंने देखा कि परवाले चींटे और चींटियाँ केवल उन्हीं की बस्ती से नहीं, बल्कि दूसरी बहुत-सी

बस्तियों से भी निकल रही थीं जो जंगल में उनके आसपास थीं। चींटे-चींटियों के बड़े-बड़े ग़ोल (झुंड) निकल-निकलकर ऊपर आसमान में उड़ रहे थे।

मिरमीका के लिए यह अनोखा तजरिबा था। वह खुले आसमान में उड़ते हुए बहुत ख़ुशी महसूस कर रही थी। उसके पास ही एक प्यारा-सा चींटा भी उड़ रहा था। वह उसे बहुत अच्छा लगा और उसने उससे दोस्ती कर ली। अब एक साथ उड़ना उसे और भी अच्छा लग रहा था।

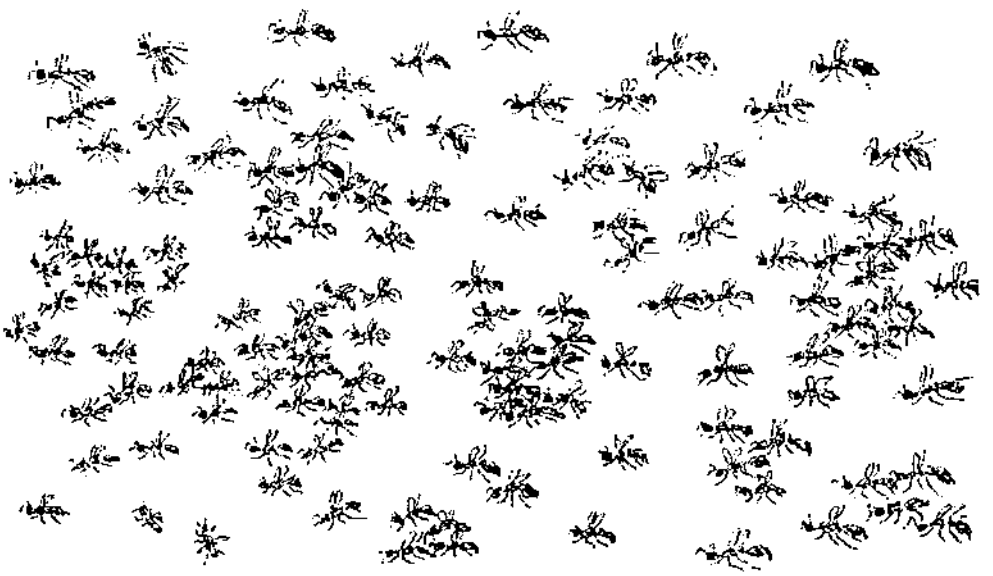

उड़ती हुई चींटियों का झुंड

मगर अफ़सोस! यह ख़ुशी ज़्यादा देर न रह सकी। उन्हें उड़ते हुए अभी ज़्यादा देर न हुई थी कि गौरैयों का एक झुंड कहीं से आ निकला और उन्होंने चींटे-चींटियों को बड़ी बेदर्दी से पकड़-पकड़कर खाना शुरू कर दिया। मिरमीका ने घबराकर अपने साथी की तरफ़ देखा, मगर वह भी ग़ायब था। मालूम नहीं किसी गौरैया के मुँह का निवाला बन गया था या फिर अपनी जान बचाने में सफल हो गया था। उसने भी बहुत तेज़ी से ज़मीन का रुख़ किया और जल्दी से ख़ुद को ज़मीन पर पड़े एक पत्ते के नीचे छिपा लिया। कुछ देर बाद उसने पत्ते के कोने से झाँककर देखा, बाहर का दृश्य तो कुछ और भी ख़तरनाक हो गया था। उसने

गिरगिट चींटी खाते हुए

देखा बहुत-से चींटे और चींटियाँ ज़मीन पर बेदम पड़े थे और कई मोटे-मोटे गिरगिट अपनी लम्बी-लम्बी ज़बानें बाहर निकाले उनपर हाथ साफ़ कर रहे थे। मिरमीका फिर पत्ते के नीचे हो गई। उसने सोचा, घबराने से काम नहीं चलेगा। अगर जान बचानी है तो कोई-न-कोई तरकीब तो निकालनी ही पड़ेगी। उसने कुछ सोचकर अपने नीचे की ज़मीन को अपने मज़बूत दाँतों और अगले पैरों से खोदना शुरू कर दिया और कुछ ही देर बाद एक छोटी-सी सुरंग बनाने में सफल हो गई। उसने ख़ुद को उसके अन्दर छिपा लिया। मगर ख़तरा अब भी था, क्योंकि गिरगिट की ज़बान तो यहाँ भी पहुँच सकती थी। उसने मेहनत करके सुरंग को कुछ और गहरा किया। सुरंग के आख़िरी सिरे को चौड़ा करके एक छोटा-सा कमरा बना लिया और बाहरी सुराख़ को मिट्टी की मदद से बन्द कर दिया। अब कोई ख़तरा न था। मिरमीका अपनी जान बचाने में सफल हो गई थी।"

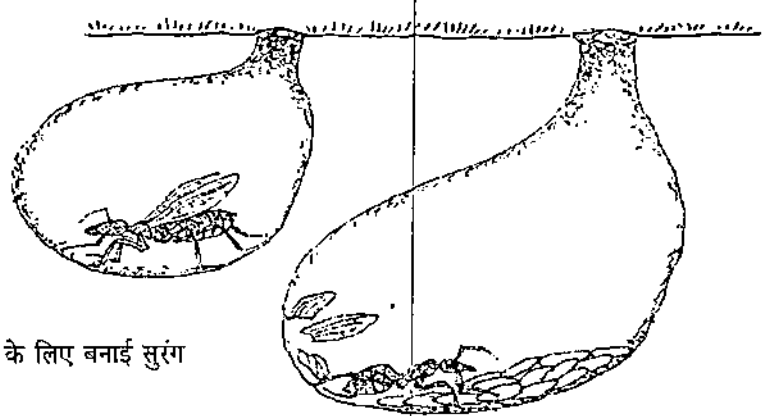

दुश्मन से बचाव के लिए बनाई सुरंग

"मगर वह इस तरह कब तक बन्द रह सकती थी। खाने-पीने की व्यवस्था

के लिए उसे कभी तो बाहर निकलना ही था।" अली साद ने कहा।

"कुछ खाना तो उसके पेट में अभी तक मौजूद था। मुँह की थैली भी खाने से भरी हुई थी और साथ ही अपने शरीर में मौजूद चर्बी को पिघलाकर भी काम चलाया जा सकता था, मगर इस समय तो मिरमीका कुछ और ही सोच रही थी।" दादा-अब्बू ने बताया।

"उस समय मिरमीका खाने के अलावा भला और किस चीज़ के बारे में सोच सकती थी?" अली अब्दुल्लाह ने पूछा।

"उसने एक बड़ा और मुश्किल फ़ैसला किया था। उसने तय किया था कि वह कुछ दिन भूखी रहेगी और कुछ अंडे देकर उनसे बच्चे निकालेगी। जो भी खाना उसके पास मौजूद है, उससे वह उनकी परवरिश करेगी। अगर वह उस समय तक ज़िन्दा रह गई और बच्चे बड़े हो गए तो हो सकता है वे उसकी जान बचा लें। जान बचने के अलावा इस तरह उसका अकेलापन भी दूर हो जाएगा।" दादा-अब्बू ने बताया।

"वाक़ई मिरमीका ने सोचा तो बहुत ख़ूब, मगर इतने दिन भूखे-प्यासे रहना कोई आसान काम नहीं होगा।" अली अब्दुल्लाह ने अपना ख़याल ज़ाहिर किया।

दादा-अब्बू ने आगे बताया—

"सचमुच यह बहुत हिम्मत और हौसले का फ़ैसला था जिसमें मिरमीका ने अपनी जान तक दाँव पर लगा दी थी। उसने बहुत सोचकर केवल पन्द्रह अंडे दिए। वह उन्हें चाट-चाटकर साफ़ करती और गर्म रखने की भी कोशिश करती। कुछ दिन बाद उन अंडों से सफ़ेद-सफ़ेद गोल-मटोल लारवे निकल आए। अब तो मिरमीका का काम बहुत बढ़ गया था। उसने अपने मुँह की थैली से थोड़ा-थोड़ा खाना उन्हें खिलाना शुरू कर दिया। वह बेचारी ख़ुद खाना न खाने की वजह से कमज़ोर होती जा रही थी। उसने बढ़ते हुए लारवों को न केवल अपने शरीर की चर्बी खिलाना शुरू किया, बल्कि अपने पर भी नोचकर फेंक दिए और परों को हरकत देनेवाली ताक़तवर मांसपेशियों को भी घुला-घुलाकर उससे लारवों का पेट

भरा। देखते-ही-देखते लारवे बड़े हो गए और एक दिन उन्होंने अपने मुँह से रेशम का धागा बनाकर ख़ुद को उसमें लपेट लिया। अब वे प्यूपे थे और उनके खाने की ज़रूरत ख़त्म हो गई थी। अपने बड़े होने के बीच लारवों ने अपनी माँ का इतना ख़याल ज़रूर किया था कि उन्होंने अपने शरीर की गन्दगी को बाहर नहीं निकाला था, ताकि माँ का काम ज़्यादा न बढ़े, मगर प्यूपे बनने से पहले उसे बाहर निकालना ज़रूरी था।"

"तब तो मिरमीका को बहुत मुश्किल हुई होगी। बेचारी कमज़ोर माँ ने भला उसकी सफ़ाई किस तरह की होगी?" आबिद ने सवाल किया।

"मिरमीका कमज़ोर तो ज़रूर हो गई थी, मगर उसने अपने होशो-हवास क़ायम रखे थे। उसने लारवों की गन्दगी को घर के एक कोने में जमा किया और उससे खाद का काम लेते हुए फफूँद के उन रेशों को बो दिया जो अभी तक उसकी थैली में महफ़ूज़ थे।" दादा-अब्बू ने जवाब दिया।

"भला मिरमीका ने ऐसा क्यों किया? इससे उसे क्या लाभ हो सकता था?" अली अमीन ने पूछा।

"यह आनेवाली चींटियों के भोजन का प्रबन्ध था। जब तक प्यूपों से नई चींटियाँ बाहर निकलीं, फफूँद का छोटा-सा खेत तैयार हो चुका था। प्यूपों से बाहर आनेवाली पन्द्रह चींटियों ने उस खेत से थोड़ी-थोड़ी फफूँद ख़ुद खाई और कुछ अपनी माँ को भी खिलाई, जिसके फ़ौरन बाद उन्होंने सुरंग का बन्द सुराख़ खोला और बाहर निकल गईं। कुछ ही देर बाद उनमें से हर एक खाने की कोई-न-कोई चीज़ अपने मुँह में दबाए वापस आई और सबसे पहले उसे अपनी भूखी माँ के मुँह में डाल दिया।" दादा-अब्बू ने रोचक बातें बयान करते हुए आगे बताया—

"जैसे-जैसे मिरमीका को भोजन मिलता गया वैसे-वैसे उसकी सेहत भी बेहतर होती गई और कुछ ही दिनों बाद वह पहले जैसी तन्दुरुस्त हो गई। वह बहुत ख़ुश थी। उसकी हिम्मत और मेहनत काम आई थी। उसने न केवल अपनी जान

बचा ली थी, बल्कि अपनी सूझ-बूझ से अपनी नस्ल को बचाने में भी कामयाब हो गई थी। उसने अगली बार कुछ ज़्यादा संख्या में अंडे दिए। उसे अब ख़ुद मेहनत करने की ज़रूरत नहीं थी। उसके छोटे-से घर में अब पन्द्रह नई चींटियाँ भी मौजूद थीं। अंडों से लारवे निकालने और फिर प्यूपों की देखभाल का सारा काम उन्होंने अपने ज़िम्मे ले लिया। कुछ दिनों बाद चींटियों की संख्या कुछ और बढ़ गई। छोटा-सा घर अब भरा-भरा लगने लगा था। मिरमीका ने नई चींटियों को मशूवरा दिया तो उन्होंने उस घर को थोड़ा बड़ा कर लिया। एक कमरा अपनी माँ मिरमीका के लिए ख़ास कर दिया और कुछ दूसरे कमरों में अंडे, लारवे और प्यूपे रखने का प्रबन्ध कर दिया। भोजन जमा करने के लिए भी कई अलग जगहें बनाई गईं। अंडों की संख्या जैसे-जैसे बढ़ती गई वैसे-वैसे घर के काम भी बढ़ते गए।"

"मिरमीका को लगा कि जिस जगह उसने यह घर बनाया था वह ज़्यादा अच्छी नहीं है। उसने सोचा कि अगर बारिश ज़्यादा हुई तो घर में पानी भी भर सकता है। यह विचार आते ही उसने कुछ चींटियों से कहा कि बाहर जाकर कोई दूसरी जगह घर बनाने के लिए खोजें जो ज़रा ऊँचाई पर हो और वहाँ पेड़-पौधे भी ज़्यादा हों ताकि उन्हें भोजन आसानी से मिल सके। चींटियों ने एक ऊँचे से टीले पर एक ऐसी जगह खोज निकाली। अब मिरमीका ने अपने शरीर से एक बू छोड़ी जिसे महसूस करते ही सब चींटियाँ पुराना घर छोड़कर नई जगह जाने को तैयार हो गईं। नई जगह खोजनेवाली चींटियाँ आगे-आगे चलीं। वे हवा में एक ख़ास कायरोमोंस छोड़ती हुई चल रही थीं जिससे एक रास्ता बनता जा रहा था। दूसरी सब चींटियाँ उसी रास्ते पर चलकर नई जगह पहुँच गईं। वहाँ पहुँचकर उन्होंने तेज़ी से घर बनाना शुरू कर दिया। एक ऊँची-सी जगह पर सबसे पहले उन्होंने एक सुराख़ किया और फिर उससे कई लम्बी-लम्बी नालियाँ निकाल लीं। ये नालियाँ बड़े-बड़े चौड़े कमरों में निकलती थीं। उन्होंने नालियों को गहराई में ले जाकर एक सुन्दर कमरा मिरमीका के लिए भी बनाया ताकि वह वहाँ आराम से रहे और ढेरों अंडे दे। इसके अलावा उन्होंने जगह-जगह बहुत-से

कमरे और बनाए जिनमें अंडे, लारवे और प्यूपे रखने का प्रबन्ध था। कई कमरे भोजन जमा करने के लिए थे, ताकि कभी भी भोजन की कमी न हो। उन्होंने कुछ कमरे फफूँद के बाग़ लगाने के लिए भी छोड़ दिए।"

अब पुराने घर का सारा सामान जिनमें नए अंडे, लारवे, प्यूपे और बहुत-सी भोजन की चीज़ें थीं, उन्हें नए घर में लाने का सवाल था। अपनी बू से बनाए हुए रास्ते पर चलकर वे एक बार फिर अपनी पुरानी जगह आईं और हर एक ने थोड़ा-थोड़ा सामान अपने मुँह में दबाया और उसी रास्ते से नए घर की ओर चल

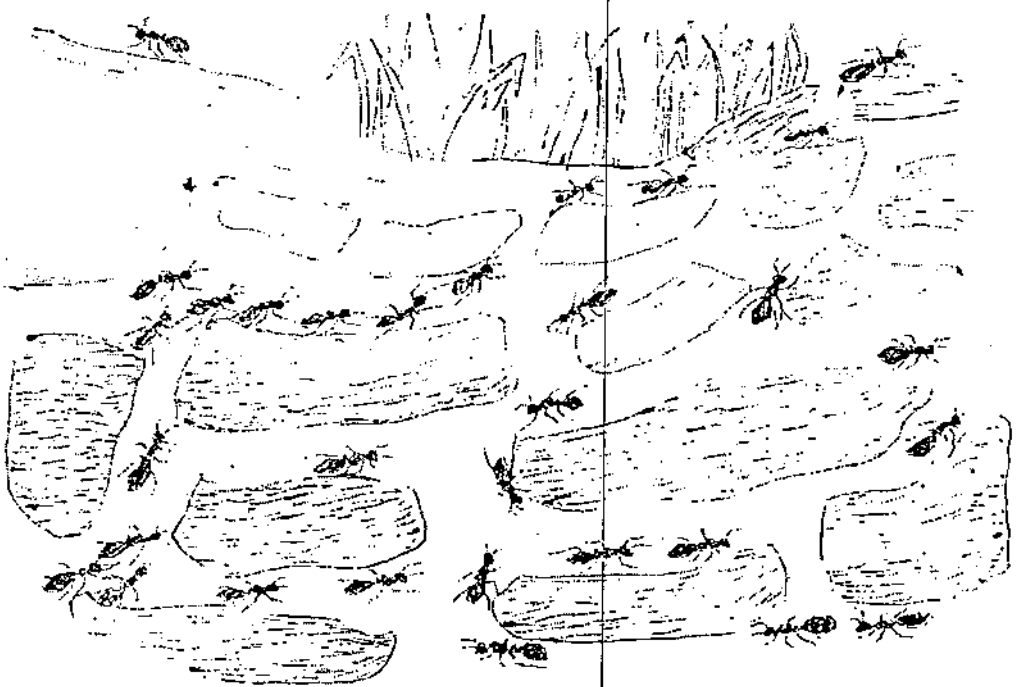

मिरमीका की नई बस्ती

पड़ीं। थोड़ी ही देर की मेहनत के बाद पुराने घर की सब चीज़ें नए घर में आ गईं। यह घर सबको बहुत पसन्द आया और सब चींटियाँ ख़ुशी-ख़ुशी अपने कामों में लग गईं।"

"मिरमीका को लगा कि घर में खाने की चीज़ों की तो कोई कमी नहीं, मगर वहाँ पीने के लिए कुछ भी नहीं है।" यह सुनकर आबिद ने कहा—

"क्या चींटियाँ पानी भी पीती हैं?"

"चींटियों को आमतौर पर पौधों का मीठा रस बहुत पसन्द है। पौधों के पत्तों की जड़ों में कुछ उभार होते हैं, जिनसे चींटियाँ यह रस प्राप्त करती हैं। वैसे चींटियाँ रस प्राप्त करने के लिए एक और तरीक़ा भी इस्तेमाल करती हैं जो बहुत ही अनोखा और निराला है।" दादा अब्बू ने बताया।

"वह क्या तरीक़ा है?" अली अब्दुल्लाह ने जल्दी से पूछा।

"विभिन्न पौधों के पत्तों, तनों या जड़ों पर एक ख़ास तरह के कीड़े होते हैं जो भुंगे कहलाते हैं। तुमने मूली, पालक के पत्तों से चिमटे ये भुंगे ज़रूर देखे होंगे। भुंगे अपनी सीरिन्ज जैसी सूँड से पौधों का रस चूसते रहते हैं। चींटियाँ इन भुंगों को बहुत पसन्द करती हैं, क्योंकि उन्हें इन भुंगों से रस प्राप्त करने का तरीक़ा मालूम है। जिन पौधों पर भुंगे होते हैं वहाँ चींटियाँ भी ज़रूर नज़र आती हैं। मिरमीका के नए घर में कुछ कमरे ऐसे भी थे जहाँ पौधों की जड़ें फैली हुई थीं। उसने कुछ चींटियों से कहा कि वे भुंगों को खोजकर लाएँ और उन्हें कमरे में फैली हुई जड़ों पर पाल लें। चींटियों ने भुंगे तलाश किए और उन्हें लाकर जड़ों पर छोड़ दिया। यह बिलकुल ऐसा ही था जैसे चींटियों ने गाएँ पाल लीं हों। ये भुंगे लगातार जड़ों का रस चूसते रहते थे और ख़ूब मोटे-मोटे हो गए थे। जब भी

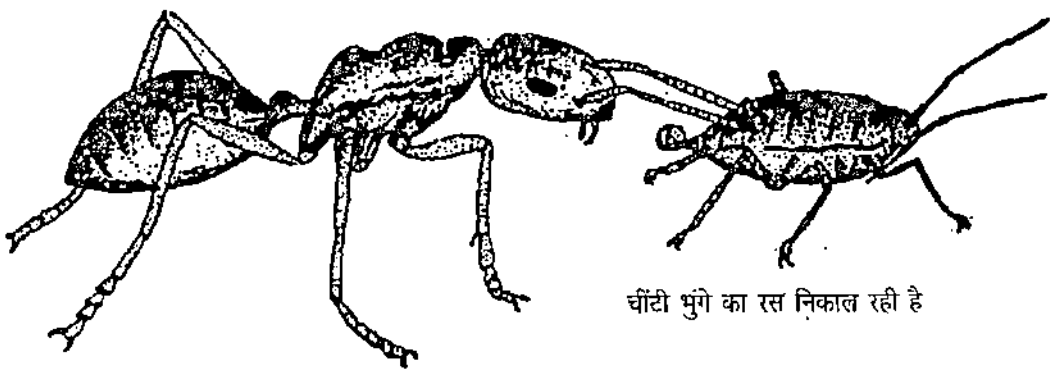

चींटी भुंगे का रस निकाल रही है

किसी चींटी को रस की ज़रूरत महसूस होती वह किसी भुंगे के पास जाकर अपने सरों पर एरियल की तरह निकले हुए एनटेनी की मदद से उसका पेट गुदगुदा

देती जिसके साथ ही भुंगा अपने पेट के आख़िरी सिरे से रस का एक क़तरा बाहर निकाल देता जिसे चींटी फ़ौरन ही चाट लेती।" दादा-अब्बू ने जवाब देते हुए आगे कहा—

"अब चींटियों को खाने के अलावा रस भी मिलने लगा था, मगर मिरमीका को लगा कि इस रस से सब चींटियों की ज़रूरत पूरी नहीं हो रही है इसलिए उसने एक दूसरी तरकीब सोची।"

"वह कौन-सी तरकीब थी?" अली अमीन ने हैरत से पूछा।

"मिरमीका ने अपने कायरोमोंस से एक ख़ास बू छोड़ी जिसे सूँघकर चींटियों की एक टीम फ़ौरन उसके पास आ गई। इस टीम की चींटियाँ घर की दूसरी चींटियों के मुक़ाबले कुछ सुस्त थीं और उनके लिए तेज़ी से कोई काम करना मुश्किल था। मिरमीका ने दूसरी चींटियों को बताया कि इन चींटियों ने ख़ुद को रस के घड़े बनना मंज़ूर कर लिया है।" दादा-अब्बू ने बताया।

"कैसी अजीब बात है! भला ये चींटियाँ रस के घड़े किस तरह बन सकती हैं?" साद ने सवाल किया।

दादा-अब्बू ने जवाब दिया—

"रस का घड़ा बनने से मतलब है कि वे चींटियाँ इस बात के लिए तैयार हो गई थीं कि वे हर प्रकार की हरकत बन्द करके किसी एक जगह पर ठहर जाएँगी और दूसरी चींटियाँ बाहर से पौधों का रस ला-लाकर उनके पेटों में जमा करती रहेंगी। यह जमा किया हुआ रस बाद में घर की दूसरी चींटियाँ जब चाहेंगी इस्तेमाल कर सकेंगी।" यह सुनकर अली अब्दुल्लाह बोले—

"दादा अब्बू! हमारे लिए यह बात समझना बहुत मुश्किल है कि एक चींटी के शरीर के अन्दर न केवल रस को जमा किया जाए, बल्कि ज़रूरत के समय उसे दोबारा निकालकर इस्तेमाल भी किया जा सके। भला यह किस तरह मुमकिन है?"

दादा-अब्बू ने समझाया—

"देखो, चींटियाँ बाहर से अपने मुँह में रस भरकर लाती हैं और इसे वॉलंटियर चींटियों के मुँह में उगल देती हैं। थोड़े ही दिनों में हर चींटी के पेट में इतना बहुत-सा रस जमा हो जाता है कि वह फूलकर अंगूर जैसी मोटी हो जाती है। अब उसके लिए चलना-फिरना तक मुमकिन नहीं होता। दूसरी चींटियाँ इन वॉलंटियर

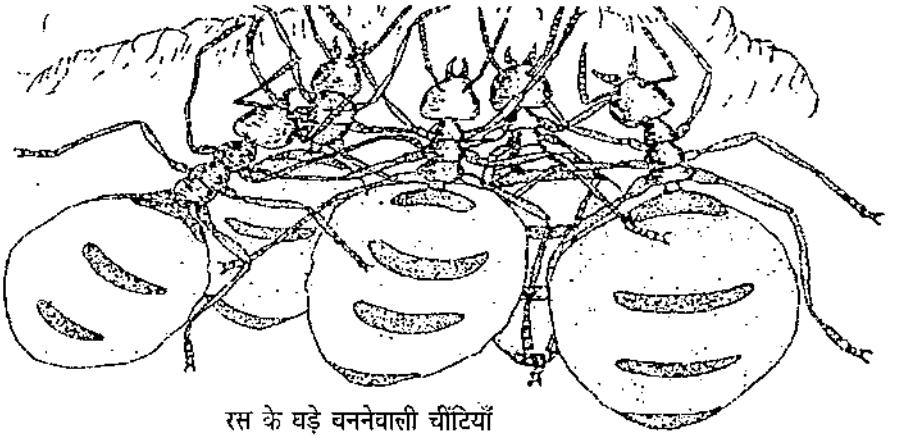

रस के घड़े बननेवाली चींटियाँ

चींटियों को घर के एक कमरे की छत से लटका देती हैं। एक कमरे की छत से लटकीं ये रस-भरी चींटियाँ बिलकुल ऐसी ही लगती हैं जैसे रस-भरे घड़े हैं। जिस ज़माने में रस का मिलना मुश्किल होता है, यही रस घर की सब चींटियों के काम आता है। जब भी रस की इच्छा लिए कोई चींटी रस-भरी चींटी के पास आती है, वह अपना मुँह किसी एक के मुँह से मिला देती है और तब रस-भरी चींटी थोड़ा-सा रस उसके मुँह में उगल देती है।"

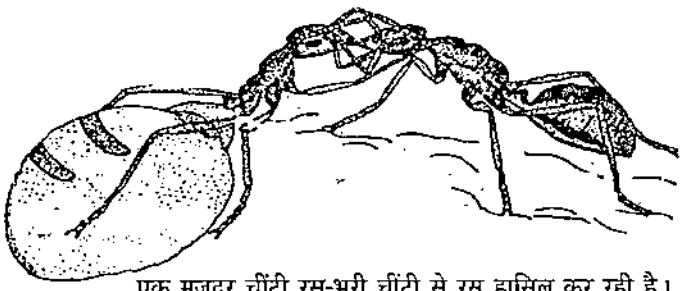

एक मज़दूर चींटी रस-भरी चींटी से रस हासिल कर रही है।

"रस-भरी चींटियों का रस ख़त्म होने पर क्या उसे दोबारा भरा जा सकता है?" अली अमीन ने पूछा।

"जिस चींटी का रस ख़त्म हो जाए तो समझ लो कि वह चींटी भी ख़त्म हो गई। उस बेचारी का पेट इतना ज़्यादा फूल जाता है कि वह ख़ाली होने के बाद भी अपनी अस्ली हालत पर नहीं आ पाता और चींटी ज़मीन पर गिरकर ख़त्म हो जाती है।" दादा-अब्बू ने बताया।

बच्चे यह सुनकर बहुत दुखी हो गए। उन्होंने दिल-ही-दिल में उन चींटियों की तारीफ़ की जो अपने साथियों की ख़िदमत में अपनी जानों तक का बलिदान करने को तैयार हो जाती हैं। दादा-अब्बू ने चींटी की कहानी जारी रखते हुए आगे बताया—

"मिरमीका जब कभी अपने घर को देखती तो उसे बहुत ख़ुशी होती। यह घर उसकी मेहनत, हिम्मत, धीरज और बलिदान का नतीजा था। अब उसने अंडे देने की रफ़्तार तेज़ कर दी थी। हर दिन कई-कई हज़ार अंडे उसके कमरे से निकलते जिन्हें दूसरी चींटियाँ अपने मुँह में दबाकर दूसरे कमरों में ले जातीं और क़ायदे से रख देतीं। वे उनकी अच्छी तरह देखभाल करतीं। लारवे निकलते तो उनके खाने का प्रबन्ध करतीं और उनकी गन्दगी साफ़ करतीं। प्यूपों के लिए दूसरी जगहें थीं। ढेरों भोजन कई कमरों में भंडार किया हुआ था और कई कमरों में फफूँद के खेत भी लहलहा रहे थे। एक कमरे में रसीले भुंगे थे तो दूसरे कमरे की छत से रस से भरे हुए घड़े भी लटक रहे थे। अब इस घर में किसी चीज़ की कमी नहीं थी।"

"अब न तो यह घर मामूली था और न ही मिरमीका। घर एक लम्बी-चौड़ी बस्ती में बदल चुका था, जहाँ रहनेवालों के पास ज़रूरत की हर वस्तु उपलब्ध थी। मिरमीका इस बस्ती की रानी माँ थी। वह जब अपनी बस्ती पर नज़र डालती तो अल्लाह का शुक्र अदा करती जिसने उसे अनमोल ख़ूबियाँ दी थीं। उसे अकसर अपनी रानी माँ याद आती जिसने उसे हर हाल में हिम्मत और साहस से बिना घबराए और होश से काम लेते हुए हालात का मुक़ाबला करने की नसीहतें की थीं। उसे याद आता कि उसने किस तरह एक छोटी-सी सुरंग बनाकर अपनी

नई ज़िन्दगी की बुनियाद रखी थी। इस बस्ती की शुरुआत केवल पन्द्रह चींटियों से हुई थी, जिन्हें उसने बड़ी मशक़्क़तों से पाला था और आज अल्लाह के फ़ज़्ल से वह इतनी बड़ी बस्ती की रानी माँ थी। अब शायद कुछ ही दिनों बाद वह भी एक बार फिर इस बस्ती के परवाले चींटे-चींटियों को अपनी रानी माँ की तरह हिम्मत और साहस दिलाकर बाहर जाने का आदेश दे सकेगी, ताकि उसकी नस्ल ज़मीन में दूर-दूर तक फैल सके और मिरमीका का नाम रौशन कर सके।"

♦♦♦